

भाखल दरिया साहेब सत सुक्रित बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही ।

## ग्रन्थ भक्तिहेतु

साखी - १

ज्ञान भक्ति निजु सार है, सुनो श्रवण चित लाय ।

वित्ति विख्यान यह, ब्रह्म अपून देखाय ॥

चौपाई

भक्ति हेतु यह ज्ञान के मूला । वृगसित कमल सहस्र दल फूला । १ ।

सत्ता शरन प्रीति लव लावै । निर्गुण निरखि विमल यश गावै ।२।

गहे टेक सत्तनाम समीपा । दुरमति दुरि दिल कमल अनूपा ।३।

कमल भँवर ज्यों बास सुबासा । रहत रहित रस करत बेलासा ।४।

बासर भये विलगि बिहराहीं । फिरि फिरि बास उलटि लपटाहीं । ५ ।

फनि मनि गण जिमि धरत उतारी । चरत चरा दिव्य दृष्टि न टारी । ६ ।

फेरि नहिं एक पलक विश्वासा । लीन्ह उठाय अर्ध मुखा ग्रासा । ७ ।

ज्यों पतंग मुख मोरत न टारी । सन्मुख दृष्टि दीपक महँ जारी । ८ ।

साहस नारि करे पिय पासा । अग्नि जरे नहिं तन को त्रासा । ६ ।

सब सुख छोड़ि पिया संग जाई । नाम निरखि ऐसे चित लाई । १० ।

चन्द चकोर देहि नहीं पीठी । ज्ञान सुरति राखहिं दिव्य दृष्टि । ११ ।

अकर्म कर्म जौ कर्म कटाई । ज्ञान छुरी रचि पचि गहि लाई । १२ ।

साखी - २

ज्ञान छुरी निश्चय गहो, काटि कर्म कलि पाप ।

सत्त शरन सत्तगुरु सेवा, मैटै कलिमलि ताप ॥

चौपाई

साधु असाधु बिलोकहिं नैना । शीतल चरण उरज सुखा चैना । १३ ।

दया अंकुर दिल भक्ति विरागा । पुलकित ब्रह्म पुनीतम जागा । १४ ।

जागै सुरति ज्ञान लव लावै । अंकुर भक्ति विरह बिलगावै । १५ ।

दया धरे दिल करै विवेखा । गुरु गमि ज्ञान रहे चित पेखा । १६ ।

बिन्नु दिल दया धर्म नहिं लोका । बिन्नु सत्संग मेटे नहिं शोका । १७ ।

शीतल परिमल बास सुबासा । निकट वृक्ष सब लेहिं निवासा । १८ ।

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
परिमल पारस तामें लागा। मेटा कर्म काठ को दागा।१६।						
सन्त निकट शुभ बिलासा। सुनत श्रवण ध्वनि ब्रह्म निवासा।२०।	सतनाम					सतनाम
शीतल अंग कमल वृगसाना। पुहुप बास भंवरा लपटाना।२१।						
सत्तगुरु मिलैं सब शोक मिटाई। दया करहिं फेरि देहिं दिखाई।२२।						
मुक्ति पदारथ फल समचारी। रहत रहित रस ज्ञान विचारी।२३।	सतनाम					सतनाम
साखी - ३						
निर्मल ज्ञान विचारहु, भक्ति करहु लव लाय।						
सत शरण सत्तगुरु सेवा, आवागमन मिटाय॥						
चौपाई						
जौं सत्संग सदा चित राखे। प्रेम सुधा अमृत रस चाखे।२४।						
सन्त सुधा रस करे विनाई। ज्यों मराल नीर क्षीर बिलगाई।२५।	सतनाम					सतनाम
छोड़ि क्षीर नीर ज्यों पियई। नाम निरखि ऐसो चित धरई।२६।						
संसृत जल पय भीतर रहई। विवरण बिलगि सो इमिकरि करई२७।						
करहु विवेक विचारहु ज्ञानी। जीवन जन्म सुधा रस बानी।२८।	सतनाम					सतनाम
तेजि अचेत चेत लव लावे। ज्यों हारिल लकड़ी निर्मावे।२९।						
हारिल टेक लकड़ी पर राखा। ऐसी प्रीति अमृत रस चाखा।३०।						
ज्यों चुम्बक पारस गाँसी पावे। छोड़ि कठिन निकट चलि आवे।३१।	सतनाम					सतनाम
साखी - ४						
प्रीति करो सतनाम से, तेजि सकल भ्रम भाव।						
मिथ्या जन्म जग जातु है, फेरि धृग ऐसो न दाव॥						
चैपाई						
मिथ्या जीव गये यम के द्वारा। जन्म-जन्म भरमे संसारा।३२।						
मर्कट मूठि ज्यों जड़ को ज्ञान। त्यों-त्यों बधिक काल नियराना।३३।	सतनाम					सतनाम
ज्यों-ज्यों वृद्ध होत तन छीना। त्यों-त्यों माया विषय रस भीना।३४।						
थकित चरण चलु चक्षु न सूझे। विषम बाण उर अन्तर अरुझे।३५।						
सर जोरि काल निकट नियराना। मृतक अन्ध तन भीतर समाना।३६।	सतनाम					सतनाम
पकड़ि प्राण के कष्ट अति दीन्हा। तप्त शिला पर तावन लीन्हा।३७।						
धरहिं झुलावहिं फेरि देहिं डारी। बहुते कष्ट देहिं तेहिं मारी।३८।						
तहाँ कोई नहिं राखनि हारा। यम जीव बांधि नर्क मह डारा।३९।	सतनाम					सतनाम
निर्गुण नाह से प्रीति न लाई। आगत करहि न भजन उपाई।४०।						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सत्त-सत्त सब करे पुकारा। सत्त चीन्हे सो उतरे पारा।६०।	सतनाम	सत्त चिन्हावे सो गुरु ज्ञानी। सत्त शब्द छपलोक की बानी।६१।	सतनाम	बिनु सत्तगुरु नहिं सत्त पहचानी। बिनु पद परचे कौन गति ठानी।६२।	सतनाम
सतनाम	मन-मत ज्ञान कथो संसारा। रूप न रेखा न रंग करारा।६३।	सतनाम	जाके पिण्ड न जाके नयना। पिण्ड प्राण नहिं मुखा बैना।६४।	सतनाम	जाके रूप न जाके रेखा। अँधरे आँखि कबहिं नहिं देखा।६५।	सतनाम
सतनाम	सुनहु सन्त यह करहु विचारा। सत्तपुरुष वोये सबते न्यारा।६६।	सतनाम	जाके पिण्ड प्राण है छाया। तिनहिं सभो जगत् निर्माया।६७।	सतनाम	वोये सब करहिं निसाफ बनाई। ऐसो सत्त पुरुष हहिं भाई।६८।	सतनाम
सतनाम	अजर काया सिर छत्र विराजे। अनहद बाजा कोटिन्ह बाजे।६९।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
			साखी - ८			
			सत्तपुरुष वोये अजर हहिं, मरे जीवे नहिं जाय।			
			कहे दरिया ऐनक मिले, तो जोतिहिं जोति समाय॥			
			चौपाई			
सतनाम	ऐनक सुरति चन्द ज्यों सूरा। झलके पदुम गगन भरि पूरा।७०।	सतनाम	मुरली टेरि गगन में आवै। बोलनिहार सो इहई बजावै।७१।	सतनाम	जब लगि काम काबू नहीं आवै। तौ लगि मुरलि न टेर सुनावै।७२।	सतनाम
सतनाम	सोहंग सुरति शून्य में पेखौ। अजपा मूल दृष्टि महँ देखौ।७३।	सतनाम	अविगति रूप अर्ध महँ राखौ। पुहुप बास अमृत रस चाखौ।७४।	सतनाम	सुरति सोहंगम मूल में जाई। दर्शन देखि कमल बृगसाई।७५।	सतनाम
सतनाम	बिनु सत्तगुरु को भेद बतावै। गुप्त नाम यह प्रगट दिखावै।७६।	सतनाम	जीव के मूल नाम जो पावै। काल फाँस के दूरि बोहावै।७७।	सतनाम	काल फाँस जबहिं ले आवै। ज्ञान खार्ग ले ताहि देखावै।७८।	सतनाम
			साखी - ९			
			ज्ञान खडग दृढ़ के गहो, सत्तगुरु चरण निवास।			
			शीश पटकि यम जाइहें, छपलोक में बास॥			
			चौपाई			
सतनाम	तेजहु कल्पना दुर्मति दूरी। जीवन थोर काहेँ मुखा मोरी।७९।	सतनाम	जीवन थोर संशय महँ भूला। नाम समीप रहो समतूला।८०।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	गहे विश्वास तो आस पुरावै। पपीहा बूंद स्वाति झरि लावै।८१।	सतनाम	पिये बूंद जो सुरति लगाई। नाम निरखि ऐसे पद पाई।८२।	सतनाम	बरिषो बूंद गगन असमाना। जल में सीप सुरति जो ठाना।८३।	सतनाम
सतनाम	स्वाति सीप की एही प्रीति। सुपट खोलि मिले बूंद सो रीती।८४।	सतनाम	बूंद समाने निरमल मोती। निरमल ज्ञान बरे तहां जोती।८५।	सतनाम	सीप के आस पुरावनिहारा। पुजै आस जो रहे करारा।८६।	सतनाम
सतनाम	अवरि संत सब सीप समाना। सत्तागुरु पारस मूल ठेकाना।८७।	सतनाम	पारस परसे मोती होई। कहे दरिया सत्तागुरु हहिं सोई।८८।	सतनाम	सीप चेला थिर रहे इमाना। स्वाती गुरु जो आये तुलाना।८९।	सतनाम
सतनाम	साखी - १०					सतनाम
सतनाम	बिनु पारस मोती नहिं, स्वाती गुरु है ज्ञान।					सतनाम
सतनाम	सीप पारस जबहिं मिले, तब माती होय अमान।१०॥					सतनाम
सतनाम	सकुच मीन पारस कही, मोती परसे सोय।					सतनाम
सतनाम	चारि चरण दुइ मुख है, बूझे बिरला कोय।११।					सतनाम
सतनाम	गजमुक्ता विरला कहीं, कुंजल बहु संसार।					सतनाम
सतनाम	केहि पारस से उपजे, पण्डित करहु विचार।१२॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	गजमुक्ता मस्तक जेहि होई। मस्त गयंद कहावै सोई।६०।	सतनाम	स्वाती झरि बरषन जब ठाना। मस्तक बूंद जो आय तुलाना।६१।	सतनाम	चुंगल चिड़िया तेहि अवसर आई। मस्तक पारस दीन्ह लगाई।६२।	सतनाम
सतनाम	उपजे मुक्ता निर्मल सारा। है कोई पण्डित करे विचारा।६३।	सतनाम	सत्तागुरु ज्ञान बुझहु निजु सोई। बिनु पारस मुक्ता नहिं होई।६४।	सतनाम	मूल सोहंगम शब्द है सारा। सत्तागुरु सोई जो हंस उबारा।६५।	सतनाम
सतनाम	जाके पारस मूल ठेकाना। दिव्य दृष्टि जो गहे निशाना।६६।	सतनाम	सोहंग सुरति सून्य महं पेखौ। मोती झरिय गगन महं देखौ।६७।	सतनाम	सोई सत्तागुरु खोजहु ज्ञानी। मनमत ज्ञान तेजहु जड़ प्रानी।६८।	सतनाम
सतनाम	तन के त्रास जो बहुंत देखावै। पंच अग्नि में तनहिं जरावै।६९।	सतनाम	उर्धमुख झूलहिं दिन औ राती। जल के निकट सैन बहु भाँति।१००।	सतनाम	पय पीवहिं फल करहिं अहारा। नंगा फिरे तन रहे उधारा।१०१।	सतनाम
सतनाम	5					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	प्रकट भभूति भरि मुख छारा। काम क्रोध निस दिन बौपारा।१०२।	सतनाम	मृग तृष्णा मद माया न त्यागे। अन्तर कपट विषय रस लागे।१०३।	सतनाम	पाखण्ड कर्म करहिं सब जानी। ताते जीवन जन्म भौ हानी।१०४।	सतनाम
सतनाम	साखी - १३	सतनाम	उलटि मूल कहं सींचिये, तौ फरे फुले सोहाए।	सतनाम	सुरति सांच हृदय बसे, तब दुर्मति दूरि सब जाए॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	जब लगि सुरति सांच नहिं आवै। तब लगि भक्ति न दास कहावै।१०५।	सतनाम	बांधहिं भेष कपट नहिं छूटा। कठिन काल तन भीतर लूटा।१०६।	सतनाम
सतनाम	बांधहिं भेष तिलक और माला। श्रृंगी सेली बहुत रिशाला।१०७।	सतनाम	टाटी भेष व्याधा जो कीन्हा। बांधहिं भेष विषय रस लीन्हा।१०८।	सतनाम	सतगुरु ज्ञान है अगम अपारा। ज्यों दरिया जल रहे करारा।१०९।	सतनाम
सतनाम	उलटि लहरि फेरि ताहि समाई। जग के लहरि जोगावहु भाई।११०।	सतनाम	लहरि जोगाय गमि जो खाई। अन्तहुं गहिर रहे ठहराई।१११।	सतनाम	साखी - १४	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया निजु सार है, गहिर ज्ञान निजु भेद।	सतनाम	उलटि मूल कहं देखिये, ब्रह्म अनूप निषेद॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	खल को ज्ञान दृष्ट को भावे। कुमति रहे उर निस दिन दावे।११२।	सतनाम	बोवहिं कांट विषय के मूला। अवसर परे भया त्रिशूला।११३।	सतनाम	अवसर परे पीछे पछताई। विषि बोवै तेहि विषि लपटाई।११४।	सतनाम
सतनाम	सन्त को विष अमृत होइ जाई। उलटि विषि फेरि विषहीं समाई।११५।	सतनाम	सन्त द्रोह करे मूढ़ गंवारा। अपने हाथ आपु पगु मारा।११६।	सतनाम	मारहिं पगु पीछे पछताई। मेटे कुमति तब सुमति समाई।११७।	सतनाम
सतनाम	सुमति करहु निजु सन्त की सेवा। सकल मही का पूजहु देवा।११८।	सतनाम	धन्य सो ग्राम जहां संत के बासा। तहाँ साहब नीति लेहिं निवासा।११९।	सतनाम	साखी - १५	सतनाम
सतनाम	धन्य सो ग्राम वोये ठांव है, जहां भजन निर्बान।	सतनाम	मलयागिरी के बास में, बेधेव काठ अजान॥	सतनाम	6	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	सुखबोई चहुं ओर नेवासा। सन्त निकट निजु करहु विलासा।१२०।	सतनाम	सत साहब सामर्थ सुजाना। दुर्मति दूरि होय साहब ध्याना।१२१।	सतनाम	पारस मिले तो कंचन होई। ताम्बा वाके काहे न कोई।१२२।	सतनाम
सतनाम	हाट बिके फेरि महंगे मोला। तनिक कशूर नहिं तजबिज तोला।१२३।	सतनाम	ऐसो पारस सन्त समाना। सन्त साहब को एकै जाना।१२४।	सतनाम	तिल पेरे फिर तेल कहावै। फूल पारस फुलेल सोहावै।१२५।	सतनाम
सतनाम	पारस फूल से कर्म कटावै। नाम सजीवनि पारस पावै।१२६।	सतनाम	साखी- १६	सतनाम		सतनाम
सतनाम	जाति-पांति नहिं पूछिये, पूछहु निर्मल ज्ञान।	सतनाम	संत की जाति अजाति है, जिन्हि पायो पद निर्बान।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	स्वाती बूंद केदली महं आवै। पारस पाये कपूर कहावै।१२७।	सतनाम	छोड़ि कर्म निःकर्म कहावै। जाति अजाति नाम सो पावै।१२८।	सतनाम
सतनाम	देह धरे सब जाति अजाती। बोलनिहार बोले बहु भांति।१२९।	सतनाम	बोलनिहार सबे महं बोले। एकै ब्रह्म सबै घट डोले।१३०।	सतनाम	दर्पण फूटा कोटि पचासा। दरशन एक सबै महं बासा।१३१।	सतनाम
सतनाम	एके दरश दिसे सब माहीं। हिन्दू तरुण दोबिधा चित्त नाहीं।१३२।	सतनाम	पुरुष एक सबन्हि ते न्यारा। जाको तेज बरते संसारा।१३३।	सतनाम	जाको अंश जीव सब अहई। बोलनिहार बोले घट कहई।१३४।	सतनाम
सतनाम	ज्ञानी होय सो करे विचारा। ब्रह्म एक हैं, पुरुष निनारा।१३५।	सतनाम	साखी- १७	सतनाम		सतनाम
सतनाम	एके ब्रह्म सबे घट, देखो शब्द विचारि।	सतनाम	शब्द दुराये ना कहों, कहों सभे परचारि।।	सतनाम		सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	खून करे मद मासु जो खाई। चौरासी जीव जन्मे।१३६।	सतनाम	खून करे खून सो पावै। वोएल के वोएल ताहि भरमावै।१३७।	सतनाम
सतनाम	वोएल बिना कोई जाए न पावै। करम दण्ड फेरि ताहि भरमावै।१३८।	सतनाम		सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	7	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
		साखी - १८				
सतनाम		कहे दरिया नाहिं बांचिहो, बिनु दिये कर्म दण्ड।		सतनाम		
		कहां भागि जीव जाइहैं, सात द्वीप नव खण्ड॥				
		चौपाई				
सतनाम		तीन लोक जाकी ठकुराई। वोएल दीन्ह तीनहुं जग आई।१३६।		सतनाम		
		पहिले वोएल अपनो दीन्हा। जड़ जीवन को अंक लिखि लीन्हा।१४०।				
सतनाम		राम कृष्ण वोएल जग दीन्हा। जाकर वोएल ताहि लिख लीन्हा।१४१।		सतनाम		
		राम कृष्ण ले कवन कहावै। करे खून वोएल सो पावै।१४२।				
सतनाम		जीव के दर्द बुझहु रे भाई। दर्दवंत के दर्द समाई।१४३।		सतनाम		
		जो यह दया दर्द दिल आने। दर्दवंत सो जक्त बखाने।१४४।				
सतनाम		एके ब्रह्म सभो घट सूझे। ज्ञानी होय शब्द यह बूझे।१४५।		सतनाम		
		जब लगि जीव दर्द नहिं आवै। तब लगि नाम दर्श नहिं पावै।१४६।				
सतनाम		समुझहु सन्तहि शब्द निर्बाना। निकेवल निर्लेप पद ज्ञाना।१४७।		सतनाम		
		साखी - १९				
सतनाम		जीव दया दिल में धरो, भक्ति करो व्रत नेम।		सतनाम		
		कहे दरिया दुर्मति तेजो, चरन कमल पद प्रेम॥				
		चौपाई				
सतनाम		बिना प्रेम नहिं भक्ति विवेखा। होये प्रेम यह गुरगमि पेखा।१४८।		सतनाम		
		प्रेमहिं प्रेम मिले निजु बैना। ज्यों जल कमल रहे सुख चैना।१४९।				
सतनाम		ऐसो प्रेम प्रीति गहि लावै। नाम संजीवनि ता सुख पावै।१५०।		सतनाम		
		प्रेम प्रीति गहि गांठि लगावै। करे भक्ति निजु प्रेम सो पावै।१५१।				
सतनाम		करहु प्रेम पद पंकज ज्ञानी। जीवन थोर तेजहु बहु बानी।१५२।		सतनाम		
		जीवन थोर माया मद लोभा। देखि कुसुम रंग ता चित चोभा।१५३।				
सतनाम		चित्र विचित्र रचो चित्रसारी। नट नागरि पट देत हैं तारी।१५४।		सतनाम		
		वेश्या भांड करहिं तत्काला। भूले गुमान सो मद मतवाला।१५५।				
सतनाम		सन्त सेवा नहिं गुरु गमि ज्ञाना। अन्तर अन्धपट रहा मुदाना।१५६।		सतनाम		
		साखी - २०				
सतनाम		चारि पदारथ पाइके, क्यों न भजो सतनाम।		सतनाम		
		साई द्रोह जस सेवका, कहां पावे विश्राम॥				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	विषय बेकार तेजहु जड़ प्रानी। सुमिरहु नाम अनुपम बानी।१५७।	सतनाम	यह माया कहु केह की चेरी। सुर नर मुनि सब बांधेउ बेरी।१५८।	सतनाम	सुर नर मुनि औ तपे संन्यासी। मन माया ग्रिव डारे फांसी।१५९।	सतनाम
सतनाम	कंचन कोट लंका बहु भांती। चित्र विचित्र रचो चहुं कांती।१६०।	सतनाम	चित्र विचित्र सब कनक उरेहा। पल में गर्द भया सब खेहा।१६१।	सतनाम	सीता मोहनी रही भवानी। रावन हरि अपने गृह आनी।१६२।	सतनाम
सतनाम	मन माया नहिं चिन्हे गंवारा। काल कठिन चाहे सभ मारा।१६३।	सतनाम	मन की बाजी सबै बंधावै। बाजीगर का भेद न पावै।१६४।	सतनाम	बाजीगर जो लिखि ले आवै। चित्र बाध के आनि देखावै।१६५।	सतनाम
सतनाम		साखी - २१		साखी - २१		
सतनाम		बाजीगर की खेलि यह, कहे कवन पतिआय।		कहे दरिया मन सभे नचावे, बूझि परे पछताय।।		
सतनाम		चौपाई		चौपाई		
सतनाम	माया रूप बलि छरौ बनाई। माया ते जग चुनि चुनि खाई।१६६।	सतनाम	माया रूप कंस बध कीन्हा। यह भेद केहु बिरला चीन्हा।१६७।	सतनाम	आवे जावे जगत् उपजावे। मन माया फिरि जोति समावे।१६८।	सतनाम
सतनाम	मन के रंग बिरला केहु जाना। जाको सुरति साच है ज्ञाना।१६९।	सतनाम	यह मन चंचल चतुर है चोरा। मन मुरीद है मनहिं कठोरा।१७०।	सतनाम	मन बुद्धि बल कथे यह ज्ञाना। मन अनन्त रूप धरे जहाना।१७१।	सतनाम
सतनाम	यह मन काम क्रोध सुख भोगा। मन योगी है मन है रोगा।१७२।	सतनाम	मन त्रिगुन धरे यह छन्दा। सुर नर मुनि परे मन के फन्दा।१७३।	सतनाम	यह मन आवे यह मन जाई। यह मन या जग जीव सब खाई।१७४।	सतनाम
सतनाम	ब्रह्मा विष्णो हहिं मन के अंशा। मनहिं रावन भये विध्वन्सा।१७५।	सतनाम		साखी - २२		
सतनाम		कंचन कोटि लंका बनो, जारि कीन्ह धूरि धाम।		थोरे मद जनि मातहु, भजन करो सतनाम।।		
सतनाम		चौपाई		चौपाई		
सतनाम	राजा पृथु पृथ्वी सब लीन्हा। अति बल जोर सभे बस कीन्हा।१७६।	सतनाम	जर जराव सभे रजधानी। सब मिलि गये नरक की खानी।१७७।	सतनाम		
सतनाम			9			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	जराव सभो अति कीन्हा। बिना भजन कछु संग न लीन्हा।१७८।	सतनाम	मन की ममिता सभो ढहावै। बिना भजन कछु काम न आवै।१७९।	सतनाम	संग सेना दुर्योधन ठाना। क्षण महं प्रलय सभो बिलाना।१८०।	सतनाम
सतनाम	भक्त पक्ष सदा उन्हि राखा। निर्मल ज्ञान भेद यह भाखा।१८१।	सतनाम	पण्डो प्रन राखा उन्हि जानी। दुर्योधन की ना रही निशानी।१८२।	सतनाम	आये युधिष्ठिर कृष्ण पियारा। राखिन्ह प्रन तेहि भक्ति विचारा।१८३।	सतनाम
सतनाम	<p>साखी - २३</p> <p>राखो प्रण तेहि जानि के, कियो भक्ति प्रतिपाल।</p> <p>अपने पक्ष के कारने, काटो जम की जाल॥</p> <p>चौपाई</p>					सतनाम
सतनाम	सन्त महिमा कछु कहि नहिं जाई। जिन्हि जिन्हि भजन नाम लवलाई।१८४।	सतनाम	नाम निरखि जिन्हि करहिं विवेखा। सतनाम निश्चय दिल देखा।१८५।	सतनाम	राय निरंजन निरंकारा। तीन लोक ताको पैसारा।१८६।	सतनाम
सतनाम	ब्रह्म विष्णो महेश्वर देवा। सब मिलि करहिं ज्योति की सेवा।१८७।	सतनाम	सत्तपुरुष सबन्हि ते न्यारा। चौथा लोक जहां रंग करारा।१८८।	सतनाम	<p>साखी - २४</p> <p>चौथा लोक सर्व ऊपरे, जहां पुरुष निर्बान।</p> <p>उदित कला प्रकाश है, करो भजन निजु नाम॥</p> <p>चौपाई</p>	
सतनाम	सत्तपुरुष हहिं अजर अकेला। सत्त सुकृत उनहिं मन मेला।१८९।	सतनाम	बुझहु ज्ञानी करहू बिबेखा। नाम निरखि यह गुरु गमि पेखा।१९०।	सतनाम	सतनाम निजु अगम अपारा। निर्मल नाम है निर्गुन सारा।१९१।	सतनाम
सतनाम	नाम पिऊषण अमृत बानी। बूझहु सन्त सत्त सहिदानी।१९२।	सतनाम	जेहि दिन महिमण्डल नहिं तारा। तेहि दिन ब्रह्मा न वेद विचारा।१९३।	सतनाम	तेहि दिन कर्म धर्म नहिं जानी। तेहि दिन शिव शक्ति नहिं ज्ञानी।१९४।	सतनाम
सतनाम	तेहि दिन नीर न बहे बतासा। तेहि दिन इन्द्र न मेघ परगासा।१९५।	सतनाम	तेहि दिन विष्णो न दस अवतारा। तेहि दिन कर्म न धर्म पसारा।१९६।	सतनाम	तेहि दिन पुरुष वोए रहे निनारा। निरंजन लिए चंवर सिर ढारा।१९७।	सतनाम
सतनाम	रहहीं संग हुकुम नहिं टारा। सुनहु संत यह करहु विचारा।१९८।	सतनाम	सत्त पुरुष वोए अगम अपारा। छप लोक जहाँ तखत संवारा।१९९।	सतनाम	<p>10</p>	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २५			
सतनाम			पीछे सब पैदा कियो, मन माया एक संग। कहे दरिया निरमायो, प्रेम प्रीति बहु रंग॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			क्रुम जोति से कन्या भयऊ। ताते त्रिगुन रूप ओए ठयऊ।२००।		सतनाम	
			ब्रह्मा विष्णो महेश्वर जोगी। तीन कन्या तिनहूँ रस भोगी।२०१।			
सतनाम			रजगुण तमगुण तामस कीन्हा। तेज वेद विषै रस भीन्हा।२०२।		सतनाम	
			त्रिगुन फन्द रचा संसारा। यम जाल का कीन्ह पसारा।२०३।			
सतनाम			योग जाप यह जग में दीन्हा। मन्त्र गायत्री ब्रह्मा कीन्हा।२०४।		सतनाम	
			गायत्री कन्या अहे भवानी। ताको जाप मुक्ति फल ठानी।२०५।			
सतनाम			गायत्री श्रापित अपनहिं भर्मी। ताते आये जगत् में जन्मी।२०६।		सतनाम	
			आपन मुक्ति न पावे बेचारी। सो कैसे जन जगत् उधारी।२०७।			
सतनाम			नारि ध्यान सब करहिं समाधी। जड़ नहिं जानहिं अगम अगाधी।२०८।		सतनाम	
			अगम पुरुष वोए सब ते न्यारा। ताहि सुमिरे जीव होए उबारा।२०९।			
सतनाम			ताके खोजहु पण्डित ज्ञानी। सत्त पुरुष वोए हहिं निर्बानी।२१०।		सतनाम	
			ब्रह्म चिन्हहु ब्रह्मा को जाया। चिन्हहु आदि अन्त जिन्हि निर्माया।२११।			
सतनाम			ताहि चिन्हे बिनु कहवाँ जइहो। कवन ठवर जहाँ जाए समइहो।२१२।		सतनाम	
			ब्रह्मलोक धोखा है भाई। इन्द्रलोक तहाँ काल समाई।२१३।			
			साखी - २६			
सतनाम			कहे दरिया वोए अजर हैं, छप लोक में बास। तहवां काल न आवहीं, बह विधि करहिं विलास॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			एक ब्रह्म ते ब्रह्म भौ चारी। चारि बरण ते जगत् पसारी।२१४।		सतनाम	
			एक ब्रह्म सभो घट छाया। ब्रह्म देह तुम कैसे पाया।२१५।			
सतनाम			एकै पिण्ड एके है प्राना। एके मुखा रसना है काना।२१६।		सतनाम	
			एके हाथ पांव है पेटा। दुइ कर्ता कैसे तुम भेटा।२१७।			
सतनाम			एके जोइनि सभो जन्माया। तुम ना कहो कवन दे आया।२१८।		सतनाम	
			को हिन्दू को तुर्क कहाई। एकै ब्रह्म मोसल्लम भाई।२१९।			
सतनाम			माटी एक बर्तन बहुतेरा। अलखा ब्रह्म तेहि भीतर डेरा।२२०।		सतनाम	
			हिन्दू तुरुक दुई भरमाई। दुई कर्ता कइसे ठहराई।२२१।			
			11			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
एके कर्ता सृष्टि पसारा। एके ज्योति करे उजियारा।२२२।	पांच तत्व एके परगासा। छव दर्शन तहां लेहिं नेवासा।२२३।	ब्राह्मण वेद भने परपंची। झूठी बात कहे सब कंची।२२४।	होम यज्ञ सब आहुति करावहिं। बकरा खांसी जीव मरावहिं।२२५।	अपने खाहिं फिरि और खियावहिं। शास्त्र पोथी गीता सुनावहिं।२२६।	हांडी हाड़ षट्कर्म अचारा। विषया से कबहीं नहिं न्यारा।२२७।	संज्ञा गायत्री ध्यान लगावहिं। सूरति लै तृष्णा पर धावहिं।२२८।
चंचल चोर चतुर पाखाण्डा। काल लिए सिर उपर डंडा।२२९।	कहे दरिया सत्त शब्द न चीन्हे। काम क्रोध ममिता रस भीन्हे।२३०।	काम क्रोध निस दिन चित राखै। नवग्रह लाय ठगौरी भाखै।२३१।	कर्म अनेक करावहिं जानी। ब्रह्म ना चीन्हे सो अज्ञानी।२३२।	साखी - २७	ब्राह्मण सो जो ब्रह्म चीन्हें, करे भक्ति लवलीन।	कहे दरिया सोई बांचिहें, पंडित परम अधीन॥
चौपाई	सर्व मासु खात अज्ञानी। करहिं डिम्भा आचार बखानी।२३३।	घात में नवहिं सो बगु ध्यानी। रहे विषय रस लीन सो प्रानी।२३४।	खाहिं विषय रस करहिं बखानी। अन्तहु बूड़ि मरे बिनु पानी।२३५।	दया नहिं दिल करहिं विवेखा। ज्ञान निषेद नहिं चित पेखा।२३६।	नवगुण कांध तिलक अनुमाना। पढ़ि पोथी सब करहिं गुमाना।२३७।	एहि विधि चलहिं बोलहिं बहुबानी। सन्त द्रोह निस दिन दिल आनी।२३८।
साखी - २८	सन्त द्रोह नहिं करिये पंडित, देखहु शब्द अमोल।	कहे दरिया दुर्मति तेजो, साहब अजर अडोल॥	चौपाई	अजर लोक ले साहब आये। अगम लीला केहु भेद न पाये।२३९।	आपुहिं उदित धरा है काला। आपुहिं पुरुष अवरि सब चेला।२४०।	आपुहिं प्रकट जग में चलि आये। सकलो दोविधा दूरि बोहाये।२४१।
जिन्दा रूप वोये पुरुष पुराना। अजर लीला वोये अर्ध निशाना।२४२।						

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सत्त	वचन	निश्चय	निर्वाना।	श्रीमुख	वचन	लिखा निजु ज्ञाना।२४३।
सत्त	कहा	बूझे	कोई ज्ञानी।	साहब	कहा	सत्त सहिदानी।२४४।
अगम	लीला	वोये	भेद निनारा।	साहब	आये	यहाँ पगु ढारा।२४५।
शहर	धरकन्धा	थै	परवाना।	तहवाँ	साहब	आये तुलाना।२४६।
साखी - २६						
शहर	धरकन्धा	थै	कीन्हों, भाव भजन निर्वान।			
सत्तपुरुष	चलि	आयेवो,	लीला अगम निशान।।			
चौपाई						
दयावन्त	दया	बहु	कीन्हा।	दाया	करि	तब दर्शन दीन्हा।२४७।
देखि	दरश	जीव	बहुत अनन्दा।	वृगसित	कमल	मेटा दुख द्वन्दा।२४८।
माथा	नाय	अरज	जो कीन्हा।	शीतल	अंग	प्रेम रस भीन्हा।२४९।
साहब	अगम	जो	दीन्ह दिखाई।	अगम	रूप	दर्शन हम पाई।२५०।
अजर	ज्योति	श्वेत	सब छाया।	परिमल	बास	सोंधा सब धाया।२५१।
देखि	अर्ध	जहाँ	श्वेत निशाना।	चहुं	ओर	चमकि घटा घहराना।२५२।
निश्चय	जिन्दा	अगम	चलि आये।	अगम	लीला	कोई भेद न पाये।२५३।
साखी - ३०						
चरण	धरेवो	बहु	भांति से, निर्केवल निर्भय ज्ञान।			
प्रेम	प्रीति	के	कारणे, आये पुरुष अमान।।			
चौपाई						
दयानिधि	अस	बोले	बिचारी।	तुमकारण	इहवाँ	पगु ढारी।२५४।
तुम	कारण	हम	जग में आये।	प्रकट	रूप	हम तुमहिं देखाये।२५५।
अजर	लोक	तख्त	छोड़ि आये।	दीप-दीप	जहाँ	पुहुप विछाये।२५६।
तुम	सुकृत	हहु	अंश हमारा।	तुम	कारण	इहवाँ पगु ढारा।२५७।
दयानिधि	अस	बोलहिं	बानी।	सुनि	वचन	गदगद दिन आनी।२५८।
लागी	सुरति	ज्यों	चन्द चकोरा।	लागी	दृष्टि	प्रेम रस मोरा।२५९।
हौं	सेवक	निजु	दास तुम्हारा।	राखों	हुकुम	दिल धरों करारा।२६०।
साखी - ३१						
राखों	वचन	कर	जोरि के, सुनो श्रवण चित लाय।			
दयानिधि	तुम	दर्शन	में, दुर्मति सब दूरि जाय।।			
13						
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	दयानिधि अस कहा बुझाई। करहु भक्ति निजु प्रेम लगाई।२६१।	सतनाम	असल अकूफ सुनो निर्वाना। दिल की कण्ठी असल ईमाना।२६२।	सतनाम	असल अकूफ करहु तुम दासा। देखत यम के उपजे त्रासा।२६३।	सतनाम
सतनाम	मूल अकह है ऐनक सारा। चहुं ओर दिसे रंग करारा।२६४।	सतनाम	अरज करहि चरण सिर नाई। अजर लोक सब कहि समुझाई।२६५।	सतनाम	छापा सनदि गहो चित लाई। तन छूटे छपलोक समाई।२६६।	सतनाम
सतनाम	सहज योग निजु शब्द है सारा। छापा सनदि मोहर टकसारा।२६७।	सतनाम	जाके छापा मूल निशाना। सो जीव जाये छपलोक समाना।२६८।	सतनाम	करहिं सलाम अर्ज लव लाई। छपलोक के कथा सुनाई।२६९।	सतनाम
सतनाम	छपलोक के कौन सुभाऊ। कौन विलास शहर के ठाँऊ।२७०।	सतनाम	शहर अमर जहां सबै विलासा। पुहुप वेवान है अग्र सुवासा।२७१।	सतनाम	अमृत झरि चहुं ओर से आवे। चाखे प्राण बहुत सुख पावे।२७२।	सतनाम
सतनाम	दया दीप जहां पलंग सुबासा। बैठे जीव सब करहिं विलासा।२७३।	सतनाम	साखी - ३२	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सोधा अग्र परिमल की झरी है, सुनहु सन्त सुजान।	सतनाम	युग-युग अमर होय रहा, प्रेम प्रीति निर्वान।।	सतनाम		सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	दयानिधि अस बोले विचारी। अर्ज कीन्ह तब सुरति सम्भारी।२७४।	सतनाम	काया अजर देखा निर्वाना। निर्गुण कौन रंग सहिदाना।२७५।	सतनाम	कौन सरूप अमरपुर गाऊँ। कौन रंग रहे तेहि ठाऊँ।२७६।	सतनाम
सतनाम	कर्ता अजर अमर तुम मूला। प्राण पिण्ड रहे समतूला।२७७।	सतनाम	अडोल न डोलहिं युग-युग रहहीं। जिन्दा रूप भेद यह कहहीं।२७८।	सतनाम	तब साहब अस बोलहिं बैना। सुनत श्रवण शीतल भौ नैना।२७९।	सतनाम
सतनाम	एक निर्गुण बोलता है भाई। ज्ञानी जन बूझो अर्थाई।२८०।	सतनाम	दूसरा निर्गुण पवन कहावे। बहे अगम कोई अन्त न पावे।२८१।	सतनाम	तीसरा निर्गुण है निरंकारा। जाके भजे सकल संसारा।२८२।	सतनाम
सतनाम	चौथा निर्गुण अचल है भाई। जहवाँ अजरा ज्योति बराई।२८३।	सतनाम	श्वेत सिंहासन श्वेत सब ठाऊँ। श्वेते द्वीप अमरपुर गाऊँ।२८४।	सतनाम		सतनाम
सतनाम		सतनाम	14	सतनाम		सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ३३			
सतनाम			सुनहु सुकृत वचन यह, युग-युग अमर वेलास। श्वेत श्वेत सब होय रहा, उदित कला प्रकाश॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			धन्य साहब बोले सत्ता बनी। निर्गुण सर्गुण की सहिदानी।२८५।		सतनाम	
			उदित कला अजर के रेखा। सूरति साच नजर भरि देखा।२८६।			
सतनाम			तुम साहब हम दास तुम्हारा। दर्शन देखि भौ ब्रह्म उजियारा।२८७।		सतनाम	
			दुर्मति दिल के दूरि सब गयऊ। चरण कमल जबहीं चित ठयऊ।२८८।			
सतनाम			स्वर्ग नर्क के आश न धरेऊ। युग युग दास साहब चित गहेऊ।२८९।		सतनाम	
			तब साहब अस बोले बानी। तुम सुकृत हहु निर्मल ज्ञानी।२९०।			
सतनाम			तुम्हारे नगीच यम नहिं जाई। ले उड़ो छपलोक समाई।२९१।		सतनाम	
			तुम्ह कहँ का डर यह संसारा। असल वचन यह अजर हमारा।२९२।			
सतनाम			दरिया सुनहु वचन हमारा। तोहरे छापा चलिहें संसारा।२९३।		सतनाम	
			साखी - ३४			
सतनाम			तुम कह दीन्हों छापा मोहर, सत्तनाम टकसार। तोहरि बाहीं जो जीव अवाहिं, लेई उतारो पार॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			तोहरी बाहीं जो जीव आवहीं। सत्त शब्द परवाना पावहीं।२९४।		सतनाम	
			करे तत्व प्रेम लव लाई। तन छूटे छपलोक समाई।२९५।			
सतनाम			धन्य भाग यह जीवन हमारा। साहब बोले वचन करारा।२९६।		सतनाम	
			दिल में अर्ज कीन्ह एक बानी। अन्तर्यामी अन्तर्गति जानी।२९७।			
सतनाम			अरज किन्ह चरण सिर नाई। साहब सुना दृष्टि लगाई।२९८।		सतनाम	
			कवनि जुक्ति जगत जीव तरई। कवन नाम काल यह डरई।२९९।			
सतनाम			तब साहब बोले अस बानी। सत्तनाम छापा सहिदानी।३००।		सतनाम	
			सत सुकृत से प्रेम बढ़ावै। करे सुरति निजु प्रेम से पावै।३०१।			
सतनाम			गृहि माहं युक्ति से रहना। निस दिन नाम प्रेम से गहना।३०२।		सतनाम	
			सत्त पुरुष के देइ दोहाई। सुनत काल तब दूरि पराई।३०३।			
सतनाम			निश्चय गहे डगमग नहिं होई। एक व्रत सत्तनाम है सोई।३०४।		सतनाम	
			अरज कीन्ह जो तत्व लगाई। धन्य साहब सामर्थ सहाई।३०५।			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ३५			
सतनाम			धन्य साहब सामर्थ हंहिं, जिन्दा अजर अमान।		सतनाम	
			दयावंत दयानिधि, प्रेम प्रीति निर्बान॥			
			चौपाई			
सतनाम			धन्य साहब तुम अगम अपारा। सब विधि कर्ता सिरजनहारा।३०६।		सतनाम	
			तुम गति लीला लखि नहिं आवै। बड़ा भाग्य जो दर्शन पावै।३०७।			
सतनाम			ब्रह्मा विष्णो महेश्वर देवा। जुग जुग खोजिन्ह न पाइन्हि भेवा।३०८।		सतनाम	
			साच भक्ति निजु जन से राजी। प्रेम सुरति निश्चय सिर छाजी।३०९।			
सतनाम			जहां साच तहां साहब बासा। साच सुरति निजु लेहिं निवासा।३१०।		सतनाम	
			दयानिधि अस बोले विचारा। दरिया दास तुम अंश हमारा।३११।			
सतनाम			हंसि के साहब बोले बानी। का मांगहु देऊ सब जानी।३१२।		सतनाम	
			हाथी धोड़ा सबे समाजा। फेरों छत्र करों सब काजा।३१३।			
सतनाम			साच वचन बोलहु निजु बैना। जाते तुम पावहु सुख चैना।३१४।		सतनाम	
			साखी - ३६			
सतनाम			दयानिधि सुनि लीजिए, साच कहों सिर नाय।		सतनाम	
			हय हाथी नहिं मांगेवों, युग-युग दास सहाय॥			
			चौपाई			
सतनाम			माया मन तो सभे नचावै। शीश पटकि के जीव जहंड़ावै।३१५।		सतनाम	
			अरुझि मरे सब भूपति राजा। भक्ति भाव नहिं एको काजा।३१६।			
सतनाम			माया ज्ञान नहिं आवे हाथा। शीश पटकि चले यम साथा।३१७।		सतनाम	
			मन माया सुर नर मुनि मोहे। लालच कारण जीव सब जोहे।३१८।			
सतनाम			सुर नर मुनि औ तपे संन्यासी। मन माया ग्रिव डारे फांसी।३१९।		सतनाम	
			माया झलकि मोहनी जब आवे। बांधे बेरी सभे नचावे।३२०।			
सतनाम			गांठी माया जतन कै राखौ। पाखण्ड भेष ज्ञान सब भाखौ।३२१।		सतनाम	
			लालच कारन कान सब लागे। रण्डी काम कबहिं ना त्यागे।३२२।			
			साखी - ३७			
सतनाम			ऐसो गुरु ठगौरी जक्त में, दीक्षा देहिं सब ठांव।		सतनाम	
			गुरु शिष्य संग बूढ़ि मरे, कहाँ बसे निजु गांव॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम





सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ४०			
			चाँद सूर्य तारा गण, एता जीव विस्तार। ताके रूप रेखा है, दिव्य दृष्टि उजियार॥			
			चौपाई			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	ज्ञानी सो चौधारा बूझे। आदि अन्त अगम सब सूझे।३४८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	पार ब्रह्म जाके सब भाखे। अजर काया सो युग-युग राखे।३४९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	ज्ञानी होय सो करे विचारा। पार ब्रह्म हहिं अपरम पारा।३५०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	निर्मल काया वोए पुरुष पुराना। सन्त समुझि के करहु बखाना।३५१।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	कवने योग युक्ति से पावे। कवन ध्यान ले निशि दिन लावे।३५२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	कवन भजन मुख टेरि सुनावे। कवन सुरति छपलोक सिधावे।३५३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	कवन व्रत करे जीव जानी। जाते मेटे नर्क की खानी।३५४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	जाते मुक्ति पदारथ पावे। एहि संसार बहुरि नहिं आवे।३५५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सुनहु सन्त मैं करों बखाना। समुझहु भेद यह निर्मल ज्ञाना।३५६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	केतनों कष्ट जो तन के देई। मनमत ज्ञान केतनों गहि लेई।३५७।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सहज सुरति मूल लव लावे। उठत बैठत दृष्टि ठहरावे।३५८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सहज शून्य सुमिरे सो ज्ञानी। प्रेम प्रीति मूल पर ठानी।३५९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	काया दृढ़ाये काया ले राखे। योगी योग काया ले भाखे।३६०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	काया अजर केह की ठहराना। योगी यति सब मिट्टी समाना।३६१।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	हठ निग्रह योग शंकर जो ठाना। अन्तहुं काया नहिं ठहराना।३६२।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	गोरख योग काया जो साधा। हठ निग्रह करि आसन बांधा।३६३।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	निद्रा साधि पवन जो पीवे। सोतो युग-युग कबहिं न जीवे।३६४।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	केते योगी हठ निग्रह कीन्हा। रज विन्द होखे फेरि छीन्हा।३६५।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	जो योनि में जन्में आई। अजर काया कहु केहि की भाई।३६६।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	काया पतन सबकी होय जाई। महा महा मुनि गये नशाई।३६७।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - ४१			
			काया पतन सबकी भई, तुम आय गये कै बार। एक अजर सत्पुरुष हहिं, सोई रंग करार॥			
			चौपाई			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	करहु भक्ति जीवन है थोरा। मानहु शब्द कहा सुनु मोरा।३६८।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	बिना भक्ति कछु काम न आवे। जन्म-जन्म ऐसे जहँडावे।३६९।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	जे सिरजा यह तन-मन ज्ञाना। सिफित करहु निशि दिन विख्याना।३७०।	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	18	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	तन के छूटे ठवर करि लीजै। प्रेम भक्ति निश्चय दिल दीजै।३७१।	सतनाम	निर्मल ज्ञान बुझहु लाई। जाते आवा गमन मिटाई।३७२।	सतनाम	करहु भक्ति भर्म सब डारी। कर्म काल निश्चय सब झारी।३७३।	सतनाम
सतनाम	माया मोह बन्धु सुत नारी। काटहु बेरी सब जगत पुकारी।३७४।	सतनाम	माया विदेह हाथ नहिं आवे। शीश पटकि के सभे नचावे।३७५।	सतनाम	जैसे दर्पण झांई दिखावे। बिरला जन कोई पारखा पावे।३७६।	सतनाम
सतनाम	जैसे चित्र लिखे बहु भांती। देखात हित लागे चहुं पांती।३७७।	सतनाम	अहे विदेह हाथ नहिं आवे। लालच करि के सभे तरसावे।३७८।	सतनाम	चिन्हहु सत्त सुकृत चितलाई। जिन्हि मुक्ति पदारथ भेद बताई।३७९।	सतनाम
सतनाम	जिन्हि यह जीव के मूल बताई। तासो प्रेम सुरति लवलाई।३८०।	सतनाम	साखी - ४२	सतनाम	ताके खोजहु ज्ञानी, जो सबके हहिं मूल।	सतनाम
सतनाम	डार पात सब छोड़ि के, गहो पेड़ स्थूल॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	अधम मध्यम उत्तम मूला। पाखण्ड कर्म काल समतूला।३८१।	सतनाम
सतनाम	छव दर्शन छानबे पाखण्ड। तामें जगत भूला नवखण्डा।३८२।	सतनाम	छव गुरु छव घर छव उपदेशा। गुरु घर एक भेद विश्वासा।३८३।	सतनाम	पाखण्ड छानबे कांध जनेऊ। पाखण्ड कर्म पूजहिं सब देऊ।३८४।	सतनाम
सतनाम	अग्नि पवन पानी प्रकाशा। चांद सूर्य धरती निजु बासा।३८५।	सतनाम	छव दर्शन जगत् सब लागे। पाखण्ड कर्म सभन्हि मिलि जागे।३८६।	सतनाम	छव दरसन सब कोई गावै। अगम भेद बिरला कोई पावे।३८७।	सतनाम
सतनाम	अगम भेद बुझहु रे ज्ञानी। छव के तेजु गहु मुक्ति की खानी।३८८।	सतनाम	ए सब अगमग पुरुष को छाया। युक्ति युक्ति सब जक्त बनाया।३८९।	सतनाम	योगी जागे योग बखाना। पाखण्ड कर्म सब पढ़हिं पुराना।३९०।	सतनाम
सतनाम	युक्ति जाने तो योगी होई। चेतन ब्रह्म सदा है सोई।३९१।	सतनाम	तन संभारि युक्ति जो राधै। मन के चीन्हि मूल के साधै।३९२।	सतनाम	काया अग्र दृष्टि लव लाए। गगन सुरति अगम के धाए।३९३।	सतनाम
सतनाम	ब्रह्म दृढ़ाय होय उजियारा। बरे ज्योति तहां निर्मल सारा।३९४।	सतनाम	साखी - ४३	सतनाम	भंवर गुफा के चीन्हि के, करे कमल उजियार।	सतनाम
सतनाम	कहे दरिया ज्ञानी होखै, तौ राखै दृष्टि करार॥	सतनाम	19	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	जन्म दुर्लभ नहिं बारम्बारा। करहु भक्ति निजु नाम पियारा।३६५।	सतनाम	सत्तगुरु सेवा करो पहचानी। सुयश यश गहो निर्मल बानी।३६६।	सतनाम	पारख करिके सेवा ठानी। साच शब्द मुक्ति जो जानी।३६७।	सतनाम
सतनाम	चोर साहु चिन्है चितलाई। करे सेवा सुरति लवलाई।३६८।	सतनाम	बन्दीछोर तुम बन्द छोड़ावहु। आए जगतू में जीव मुक्तावहु।३६९।	सतनाम	बन्दीछोर तुम दीन दयाला। संतन के करहु प्रतिपाला।४००।	सतनाम
सतनाम	यम्बु द्वीप है काल सनेही। कठिन काल तन व्यापे देही।४०१।	सतनाम	रहे खामीर काल सब पासा। देइ अचानक जीव कहं त्रासा।४०२।	सतनाम	घट-घट बोले सभो डोलावै। बाजीगर ज्यों हुकुम चलावै।४०३।	सतनाम
सतनाम	ऐसन सुरति अचेत करावै। अवरि कहन के अवरि कहावै।४०४।	सतनाम	साखी - ४४	सतनाम	ऐसन चालि जगत में, डारे फांस अनन्त।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	दयावंत तुम दर्शन में, तोरों काल के दन्त॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	तब साहब अस बोले बानी। कहों भेद सुनो तुम ज्ञानी।४०५।	सतनाम	कहों भेद की करि देखलाओं। आवे शरण में तेहि मुक्ताओं।४०६।	सतनाम	सब पर अमल हमारा अहई। देखत काल कंपति होय डरई।४०७।	सतनाम
सतनाम	आदि अन्त हमहिं हैं मूला। अवरी डार हमहिं स्थूला।४०८।	सतनाम	पहिले मूल तब पीछे डारा। भया मूल तब डार पसारा।४०९।	सतनाम	पहिले पुरुष तब पीछे नारी। भइ जोति तब जगत् पसारी।४१०।	सतनाम
सतनाम	पहिले अकह तब कह में आवै। होये ज्ञान तब जग समुझावै।४११।	सतनाम	साखी - ४५	सतनाम	अकह मूल निजु नाम है, योग जुगुति परवान।	सतनाम
सतनाम		सतनाम	चेतनि रहो जीव जानि के, मरदो यम कै मान॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम
सतनाम	जो जीव करे नाम के आशा। ताके काल न डारे फांसा।४१२।	सतनाम	जब डारे तो लेऊँ छोड़ाई। जतन करों जीव यम नहिं खाई।४१३।	सतनाम	धन साहब तूं कृपानिधाना। आदि अन्त तुमहीं परवाना।४१४।	सतनाम
सतनाम	देखा मूल डार सब छाया। आदि अन्त तुम सभो बनाया।४१५।	सतनाम		सतनाम		सतनाम



सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
पुहुप द्वीप हंसन्हि के बासा। बहु विधि हंसा करहिं विलासा।४४२।	पुहुप बेवान छत्र सिर छाजे। बैठे हंस बहुत सुख राजे।४४३।	साखी - ४७	देखहिं हंसा प्रेम से, लेई बैठावहिं पास।	पल विलम्ब इहं कीजिये, चुंगहू बास सुबास॥	चौपाई	अमृत पोषन पियहिं अघाई। षोडश भानु दुति छवि छाई।४४४।
आगे हंस गमन जो कीन्हा। दया दीप तहवां पगु दीन्हा।४४५।	कोटि कला तहां होये उजियारा। बैठे हंस सभे सुख सारा।४४६।	पलंग बिछाय सौं धन के बासा। अविगति चंवर डोले चहुं पासा।४४७।	पल-पल बंदहिं ताकर पाऊं। जिन्हि संसारहिं शब्द सुनाऊं।४४८।	बैठे हंस हंसन्हि के पासा। अमृत पोषन पाऊ सुबासा।४४९।	साखी - ४८	अविगति रूप अपार है, को बरने तेहि ठांव।
सत्त शब्द पहचानहिं, सोई बसहिं निजु गांव॥	चौपाई	अमरा पुर तखत के ठाऊं। छत्र फिरे कोटिन्ह सिरनाऊं।४५०।	गये हंस साहब के पासा। करि सलाम तहां लेहिं नेवासा।४५१।	तखत श्वेत-श्वेत सब छाया। चहुं ओर बास सुबास सब धाया।४५२।	अजर अमर तहवां होय जाई। आवागमन के सँसे मेटाई।४५३।	साच जाने सो पहुंचे पासा। मेटि जाय जग यम को त्रासा।४५४।
साखी - ४९	ऐसन सुख शहर में, जो कोई बूझे आय।	सत्तनाम के जानबे, स्थिर बैठे जाय॥	चौपाई	निर्मल ज्ञान बुझहू चितलाई। तेजहु दुर्मति दूरि सब जाई।४५५।	दुर्मति ते ब्रह्म भौ छीना। ज्यों सेवार जल करे मलीना।४५६।	निर्मल जल ज्यों रहे सुधारा। ऐसहिं ज्ञान भुजहु निजु सारा।४५७।
पहिले ज्ञान तब पीछे मुक्ति। पीछे योग है पहिले युक्ति।४५८।	पहिले कनक तब गहना होई। पेन्हि सिंगार कामिनी रहु सोई।४५९।	पहिले सेज तब पीछे सैना। उठि प्रातः मुख मिजै नैना।४६०।				

